रणजीत टाइम्स

इंदौर

बुधवार, 22 अक्टूबर, 2025

वर्ष 01 | अंक 262 | कुल पृष्ठ : 8 | Digital

RNI-NO.MPHIN/2015/64585

प्रधान संपादक : गोपाल गावंडे

सीएम डॉ. मोहन यादव ने उज्जैन में गोवर्धन पूजन किया, गाय के बछड़े को गोद में लेकर किया दुलार

भोपाल/उज्जैन। उज्जैन की तिलकेश्वर गौशाला में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भव्य रूप से गोवर्धन पूजन किया। इस अवसर पर उन्होंने प्रदेशवासियों को गोवर्धन पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं दी और कहा कि यह पर्व प्राकृतिक खेती और कृषि विकास को बढ़ावा देने की प्रेरणा देता है। सीएम मोहन यादव ने किसानों की समृद्धि और पशुपालन को प्रोत्साहित करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार पूरे मध्य प्रदेश में गोवर्धन पूजा को विशेष रूप से मनाने का संकल्प ले चुकी है और दुग्ध उत्पादन एवं पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। इस दौरान मुख्यमंत्री ने हाथों से गायों को चारा और खली खिलाई और एक गाय के बछड़े को गोद में उठाकर प्यार से दुलारा। उन्होंने गौशाला में 56 भोग भी लगाकर गोवर्धन पूजन किया। सीएम ने कहा कि गोवर्धन पूजन दो दिन तक मनाया जाता है और राज्य सरकार इसे हर वर्ष उत्साहपूर्वक मनाने का प्रयास करती है। सीएम ने यह भी बताया कि मध्य प्रदेश में लगभग 2 करोड़ गायें हैं और उनके दूध उत्पादन व कृषि उन्नति के क्षेत्र में राज्य सरकार विशेष पहल कर रही है। उन्होंने कहा कि किसानों की भलाई और कृषि के विकास के लिए सरकार लगातार कार्य कर रही है, ताकि प्रदेश में खेती-किसानी का क्षेत्र और अधिक मजबूत बन सके। इस अवसर पर स्थानीय लोग भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे और उत्साहपूर्वक इस धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्व में भाग लिया। मुख्यमंत्री का यह पहल न केवल धार्मिक दृष्टि से बल्कि कृषि और पशुपालन के क्षेत्र में भी एक प्रेरक संदेश के रूप में देखा जा रहा है।

पुलिस स्मृति दिवस पर शहीद 11 जवानों को दी गई श्रद्धांजलि

सीएम डॉ. मोहन यादव बोले- विपत्ति में याद आती है पुलिस, अगले 3 साल में साढ़े 7 हजार पदों पर होगी भर्ती

भोपाल। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में पुलिस स्मृति दिवस के अवसर पर साल 2024-25 में शहीद हुए 11 पुलिसकर्मियों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। शहीदों में संजय पाठक, निरीक्षक जिला खंडवा; रमेश कुमार धुर्वे, निरीक्षक PTS उज्जैन; रामचरण गौतम, सहायक उप निरीक्षक 25वीं वाहिनी विशेष सशस्त्र बल भोपाल; महेश कुमार कोरी, कार्यवाहक सहायक उप निरीक्षक जीआरपी जबलपुर; संतोष कुशवाहा और प्रिंस गर्ग, कार्यवाहक प्रधान आरक्षक सतना; अभिषेक शिंदे, गोविंद पटेल, अनुज सिंह, सुंदर बघेल और अनिल यादव शामिल थे। सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा कि आज का दिन हमारे वीर पुलिसकर्मियों को याद करने और उनके योगदान को सम्मानित करने का दिन है। उन्होंने कहा कि देश की एकता

और अखंडता के लिए इन शहीदों ने अपने प्राणों की आहुति दी, विशेषकर चीन की कायराना हरकत के जवाब में पुलिसकर्मियों ने अपने कर्तव्य पथ पर जीवन का बलिदान दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि परिवार में किसी की शहादत हमेशा दुखदायी होती है, लेकिन उनके बलिदान को हम कभी नहीं भूलेंगे। इस अवसर पर सीएम ने पुलिस की भूमिका को भी उजागर किया और कहा कि पुलिस न केवल नक्सलियों और साइबर अपराध के उन्मूलन में सक्रिय है, बल्कि जनजागरण और समाजिक सुरक्षा में भी अहम भूमिका निभा रही है। उन्होंने बताया कि गौ तस्करी, अपराध नियंत्रण और जनहित के अभियान में पुलिस की सहायता से राज्य में शांति और सुरक्षा बनी हुई है। सीएम ने यह भी घोषणा की कि अगले तीन वर्षों में साढ़े 7 हजार पदों पर पुलिस भर्ती करने का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने मिशन कर्मयोगी और अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों के तहत पुलिसकर्मियों के कौशल और तैयारियों की सराहना की। उन्होंने यह भी उदाहरण दिया कि हाल ही में पुलिसकर्मियों ने CPR देकर विधायक मधु वर्मा की जान बचाई, जिससे पुलिसकर्मियों की बहादुरी और जिम्मेदारी का परिचय मिला। मुख्यमंत्री ने शहीदों के परिवारों के प्रति सरकार की पूर्ण जिम्मेदारी और सहारा देने का भरोसा भी दिलाया। उन्होंने कहा कि शहीदों की शहादत को हमेशा सम्मान मिलेगा और उनके परिवारों के साथ सरकार खड़ी रहेगी। इस अवसर पर पुलिस स्मृति दिवस का आयोजन भावपूर्ण श्रद्धांजलि और सम्मान कार्यक्रम के रूप में संपन्न हुआ।

देश के सबसे स्वच्छ शहर ने फिर दिखाई मिसाल

इंदौर ने दिवाली के पटाखों का कचरा रातोंरात किया साफ, सफाई मित्र रात 3 बजे से मोर्चा संभालने उतरे

इंदौर। देश के सबसे स्वच्छ शहर इंदौर ने दिवाली के अवसर पर फिर एक बार अपनी सफाई व्यवस्था की मिसाल पेश की। रात 12 बजे तक शहर में दीपावली की धूम रही और लोग उत्सव का आनंद ले रहे थे, लेकिन इसके तुरंत बाद रात 3 बजे से नगर निगम के सफाई मित्र और सफाई टीमों ने मोर्चा संभाल लिया। सुबह तक पूरे शहर की सड़कों, कॉलोनियों और गलियों को पटाखों और दिवाली के वेस्ट से पूरी तरह साफ कर दिया गया। नगर निगम की सफाई टीमें, IWM (इंटीग्रेटेड वेस्ट मैनेजमेंट) और अन्य संबद्ध विभागों की टीमें फील्ड में सक्रिय रहीं। सबसे पहले भीड़भाड़ वाले प्रमुख इलाकों जैसे राजवाड़ा, बाजार क्षेत्र और चौक-चौराहों की सफाई की गई। इसके बाद कॉलोनियों, मोहल्लों और गलियों की सफाई सुनिश्चित की गई।

महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने बताया कि दिवाली के दौरान डस्टबिन और सड़क किनारे जमा होने वाला कचरा सबसे बड़ी चुनौती होती है। इसलिए इन पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया। नगर निगम

ने अपने निजी ट्रैक्टर, डंपर और सफाई वाहन फील्ड में तैनात किए ताकि हर तरह का कचरा सही समय पर कचरा स्टेशन तक पहुंच सके। इंदौर नगर निगम ने जीटीएस (गारबेज ट्रांसफर स्टेशन) से लेकर प्रोसेसिंग साइट तक समयबद्ध कचरा स्थानांतरण की व्यवस्था भी सुनिश्चित की। महापौर ने कहा कि दिवाली और रंगपंचमी जैसे त्योहारों में गंदगी ज्यादा हो जाती है, इसलिए सफाई अभियान पर विशेष फोकस किया गया। सफाई अभियान की निगरानी के लिए दरोगा, सहायक सीएसआई और एचओ अधिकारी अपने क्षेत्रों में मौजूद रहे। इसके अलावा, जोनल ऑफिसर और एडिशनल कमिश्नर ने भी फील्ड का दौरा किया। पानी, ड्रेनेज, बिजली और स्वच्छता विभाग के वरिष्ठ अधिकारी भी सुबह तक फील्ड में सक्रिय रहे। इस सफाई अभियान में सभी NGO और उनकी टीमें भी शामिल रहीं, जिन्होंने डोर-टू-डोर कचरा संग्रहण में कचरा गाड़ियों के साथ सहयोग किया। इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर के माध्यम से सभी वाहनों की रीयल-टाइम निगरानी भी की गई, जिससे सफाई अभियान में किसी प्रकार की चूक न हो। इंदौर का यह प्रयास यह साबित करता है कि व्यवस्थित योजना, समर्पित कर्मी और तकनीकी निगरानी के माध्यम से शहर को किसी भी बड़े त्योहार के बाद भी स्वच्छ बनाए रखा जा सकता है।

दिन भर में कितना पानी पीएं...

हमारे लिए शरीर को हाइड्रेटेड रखना बहुत जरूरी है, ऐसे में सही मात्रा में पानी पीना हम सबकी जरूरत है। लेकिन क्या आप जानते हैं हर इंसान के शरीर में पानी की जरूरत अलग होती है। ऐसे में ये जानना जरूरी हो जाता है कि आपके शरीर को कितने पानी की जरूरत है।

आपने कई लोगों को ये कहते सुना होगा कि आज अच्छी स्वस्थ और वजन कम करने के लिए 5 से 6 लीटर पानी पीना चाहिए। इससे बॉडी डिटॉक्स होती है। इतना ही नहीं कई लोगों का ये भी मानना है कि ज्यादा पानी पीने से स्किन भी बेहतर होती है। इसलिए आजकल लोग हाइड्रेट रहने को लेकर ध्यान देते हैं। मगर कम लोग ये जानते हैं कि जितना नुकसानदेह कम पानी पीना है, उतना ही हानिकारक जरूरत से ज्यादा पानी पीना भी होता है। हमारे शरीर का 50-70 प्रतिशत वजन की वजह पानी है। दरअसल, कोशिकाएं हमारे शरीर के बिल्डिंग यूनिट होते हैं, जिन्हें जीवित रखने के लिए पानी की जरूरत होती है। पानी की कमी के कारण सेल्स में मौजूद फ्लूइड खत्म होने लगता है, जिसके कारण वे ठीक से फंक्शन नहीं कर पाते। इसलिए शरीर में सही मात्रा में पानी मौजूद होना जरूरी है। ऐसे में जानिए कि आपको रोजाना कितना पानी पीना चाहिए और इसका सही तरीका क्या है।

कितना पानी पीना है सही?

एक्सपर्ट्स की मानें तो व्यक्ति को कितना पानी पीना चाहिए, इस सवाल का जवाब कई वजहों पर निर्भर करता है। पहला कि सभी की सेहत एक समान नहीं होती। हर इंसान का रहन-सहन, खान-पान, जीवनशैली और मेडिकल कंडिशन्स अलग होती हैं, जिसकी वजह से पानी की जरूरत भी अलग होती है। कोई व्यक्ति ऐसा होता है, जो दिन भर धूप में काम करता है और कोई ऑफिस में बैठ कर। ऐसे में जाहिर है कि जो इंसान अधिक समय तक धूप में रहता है, उसके शरीर को एसी में बैठे व्यक्ति की तुलना में ज्यादा पानी की जरूरत होगी। इसलिए हर व्यक्ति को अपनी फिजिकल और मेडिकल कंडिशन के आधार पर पानी की मात्रा तय करनी चाहिए। एक्सपर्ट्स के अनुसार भारत के क्लाइमेटिक कंडिशन के आधार पर एक दिन में व्यक्ति को कम से कम 4.5 से 5 लीटर पानी पीना चाहिए। इसमें खाने और अन्य पेय पदार्थों को भी शामिल कर सकते हैं।

रणजीत टाइम्स

पूर्व शिक्षा मंत्री दीपक जोशी धनतेरस अवसर पर असहाय परिवार को दी सहायता

संजय प्रेम जोशी

लाख जतन के बावजूद भी आदिवासी बाहुल्य बागली क्षेत्र में कई परिवार मूलभूत सुविधाओं से वंचित है। विगत वर्षों में उज्ज्वला योजना के तहत महिलाओं को निशुल्क गैस कनेक्शन और चूल्हे वितरित किए गए उस वक्त शासन प्रशासन द्वारा निचले स्तर से लेकर उच्च स्तर तक सर्वे कराया और सर्वे के दौरान पात्र हितग्राहियों को उज्जवला कनेक्शन वितरित किए इसके बावजूद भी बागली मुख्यालय से 5 किलोमीटरदूर बरझाई ग्राम पंचायत के ग्राम साल खेतिया में निवास कल्याणी महिला अवंती बाई इस योजना से वंचित रह गई उसके परिवार में चार संतानों में तीन संतान जन्म से दृष्टि बाधित हे उक्त महिला को खाना बनाने में बहुत परेशानी आती थी यह समाचार पूर्व शिक्षा मंत्री एवं क्षेत्र से पूर्व के विधायक रहे दीपक जोशी को लगा उन्होंने धनतेरस अवसर पर इस परिवार की सहायता करने के लिए देवास मुख्यालय से गेस चुल्हा टंकी रेगुलेटर लाइटर आदि खरीद कर संबंधित परिवार की मुखिया के सुपुर्द किया साथ ही आने वाले वर्षों में स्वयं की ओर से गैस आपूर्ति पूर्ण करने का आश्वासन दिया। जानकारी अनुसार यह परिवार बेहद दयनिय स्थिति में पुराने आवास में निवास कर रहा है। प्रधानमंत्री आवास स्वीकृति के निर्माण में कुछ तकनीकी परेशानी आने से पूर्ण नहीं हो पाया। इस दौरान पूर्व सरपंच अली भाई पटेल पवन राठौर मुकेश गुप्ता बंसी प्रजापत किशोर सोरठ चेतन योगी धर्मेंद्र झालोरीया बागली नगर परिषद पूर्व अध्यक्ष एवं वर्तमान पार्षद प्रतिनिधि अमोल राठौर सहित कई कार्यकर्ता उपस्थित रहे। जानकारी में आया कि तकनीकी कमीयो के चलते उक्त परिवार को कोई भी आर्थिक सहायता नहीं मिल पा रही है।

अद्वितीय भक्ति, अद्भुत दृश्यजैसे धरा पर उतरी हो मिनी अयोध्या

करैरा, रविवार की सांझ जब सूर्य पश्चिम की ओर ढल रहा था, तब करैरा नगर में स्थित बगीचा वाले हनुमान जी के धाम में एक नया सूरज उग रहा था भक्ति, प्रकाश और आस्था का सूरज। 21,000 दीपों की लौ से आलोकित यह पावन धाम न केवल रोशनी से जगमगा उठा, बल्कि श्रद्धा की ऊष्मा से भी तपने लगा। यह कोई साधारण आयोजन नहीं था यह था धार्मिक आस्था, संस्कृति और सामूहिक संकल्प का दीपोत्सव, जिसने करैरा को उस रात 'मिनी अयोध्या' बना दिया। दीप प्रज्वलन से पूर्व जैसे ही बगीचा धाम में शंखनाद हुआ, चारों ओर एक दिव्य कंपन फैल गया। हनुमान जी की विशाल प्रतिमा के चरणों में बैठे साधु-संतों, युवा स्वयंसेवकों और श्रद्धालुओं ने एक स्वर में ॐ हनुमते नमः का उच्चारण किया और फिर शुरू हुआ वह दृश्य, जिसे देखने के लिए शायद देवता भी आकाश से उतर आए हों। एक-एक दीप जलाया गया श्रद्धा से, संकल्प के साथ। दीपों की रेखाएं मंदिर के गर्भगृह से लेकर मुख्य द्वार तक, वृक्षों से लेकर मठ की दीवारों तक फैलीं तो लगा मानो प्रभु श्रीराम का पूरा दरबार रोशनी की चादर ओढ़ चुका हो। दीपोत्सव के उपरांत हुआ भव्य प्रवचन, जिसमें वक्ताओं ने हनुमान जी की भक्ति, अयोध्या के श्रीराम मंदिर का महत्व और दीपों के प्रतीकात्मक संदेश पर प्रकाश डाला। श्रोताओं की आंखें नम थीं और हृदय प्रभु की भक्ति से भर उठा था। जैसे ही प्रवचन समाप्त हुआ, भक्तों ने मिलकर भजन और सुंदरकांड पाठ से वातावरण को और भी दिव्य बना दिया। दूर-दराज से आए हजारों श्रद्धालुओं ने आयोजन में हिस्सा लिया। किसी ने दीप दान किया, किसी ने सेवा; लेकिन हर किसी ने अपनी उपस्थिति से यह प्रमाणित कर दिया कि बगीचा वाले हनुमान केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि जीवित आस्था हैं। यह आयोजन केवल दीपों का उत्सव नहीं था, यह था करैरा की आत्मा का जागरण। बुजुर्गों की आंखों में संतोष था, युवाओं के चेहरे पर गर्व, बच्चों के चेहरों पर जिज्ञासा और माताओं के हाथों में पूजा की थालियां। शहर की हर गली, हर कोना उस रात राम और हनुमान के नाम से गूंज उठा। जहाँ दीप जलते हैं वहां अंधकार नहीं टिकता, और जहाँ बगीचा वाले हनुमान का वास है, वहां असंभव कुछ भी नहीं!

गौतमपुरा में हिंगोट युद्ध जारी, दो योद्धा घायलः तुरा दल के झूले में आग, वीरों को अस्पताल में भर्ती

इंदौर। देशभर में प्रसिद्ध गौतमपुरा में दीपावली के दूसरे दिन परंपरागत हिंगोट युद्ध का आयोजन बड़े उत्साह के साथ जारी है। यह युद्ध सालों से धोक पड़वा के मौके पर आयोजित होता है, जिसमें गौतमपुरा और रूणजी के वीर योद्धा तुर्रा और कलंगी दलों में बंटकर परंपरा के अनुसार एक-दूसरे पर हिंगोट (अग्निबाण) चलाते हैं। इस युद्ध का उद्देश्य जानलेवा लड़ाई नहीं है, बल्कि साहस, परंपरा और लोक आस्था का प्रतीक प्रस्तुत करना है। इसमें हार-जीत का महत्व नहीं होता, बल्कि शौर्य और परंपरागत कौशल का प्रदर्शन मायने रखता है। युद्ध जितना खतरनाक लगता है, उतना ही रोमांचक भी होता है, और वीर योद्धा अपने आप को बचाते हुए मैदान में डटे रहते हैं। आज के युद्ध में तुरा दल के एक योद्धा के झूले में रखे हिंगोट में अचानक आग लग गई, जिससे दोनों दल के दो योद्धा घायल हो गए। घायलों को तुरंत प्राथमिक उपचार के लिए अस्पताल ले जाया गया। इसके बावजूद अन्य सभी योद्धा मैदान में अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर युद्ध जारी रखे हुए हैं।

मौके पर मौजूद दर्शक और आयोजक बताते हैं कि युद्ध में वीर योद्धा अपनी परंपरा और शौर्य को बनाए रखते हुए सावधानीपूर्वक मैदान में डटे हुए हैं। थोड़ी देर बाद दूसरे दल के योद्धा भी मैदान में उतरेंगे और परंपरागत हिंगोट युद्ध का रोमांच जारी रहेगा। यह परंपरा इंदौर की लोक संस्कृति और वीरता की पहचान को दर्शाती है और हर वर्ष दीपावली के अवसर पर बड़ी धूमधाम के साथ आयोजित होती है।

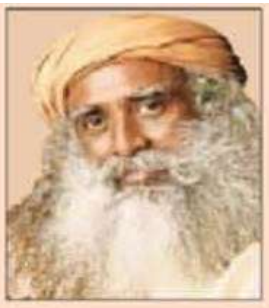

सदगुरु
ईशा फाउंडेशन के प्रमुख
आध्यात्मिक गुरु

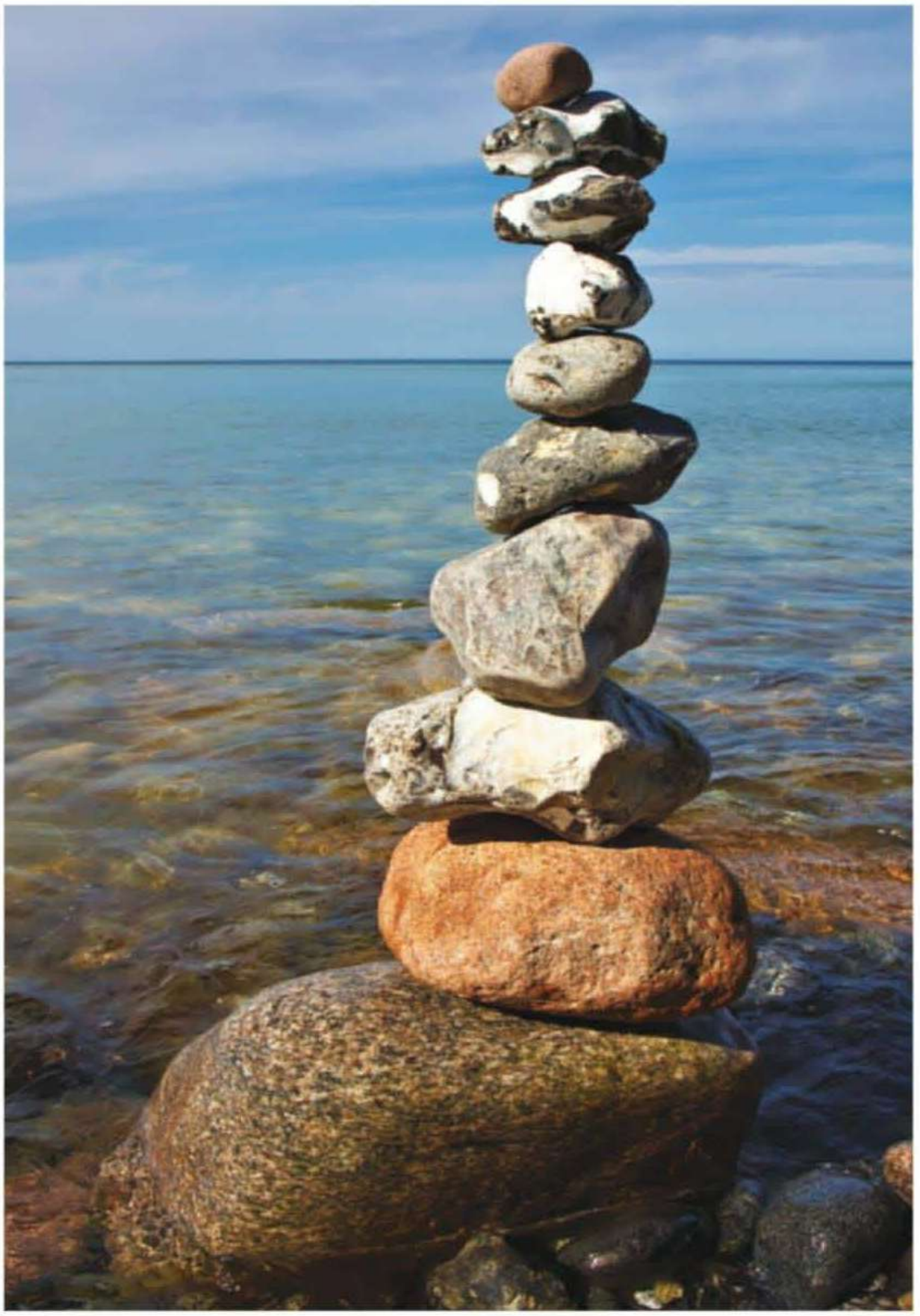

'संकट की हर घड़ी में तुमने मेरा साथ दिया है। जब मेरी नौकरी चली गई, तुमने आशाजनक वचन बोलकर मुझे दिलासा दिया। फिर मैंने अपना बिजनेस शुरू किया, उसमें नुकसान होने पर तुमने रात-दिन काम करके परिवार चलाया था। मुकदमे में जब हमारे मकान की कुर्की हो गई तब भी मन छोटा किए बिना तुम मेरे साथ छोटे घर में रहने के लिए चली आईं। आज अस्पताल में भी तुम मेरे साथ हो। पता है, तुम्हें देखते हुए मेरे मन में कौन-सा विचार आता है?' पत्नी की आंखों में आनंद के आंसू थे। पति ने कहा, 'मुझे लगता है तुम हमेशा मेरे साथ रहती हो, इसी कारण से मुझ पर संकट के पहाड़ टूट रहे हैं।' इस तरह बातों को उल्टे दिमाग से गलत ढंग से समझने वाले लोगों के साथ कौन-सा संबंध स्थायी रह सकता है?

संबंधों को कैसे निभाना है? हम उन्हें कैसे निभा रहे हैं? चाहे कितना ही घनिष्ठ मित्र हो, हमने उसके और अपने बीच एक सीमारेखा खींच रखी है। दोनों में से कोई भी उसे लांघे तो विरोध का झंड़ा उठा देते हैं। कोई एक उदारतापूर्वक झुक जाए, तभी कड़वाहट दूर हो सकती है। एक बात समझ लें, हमारे चारों ओर के लोग बहुत ही अच्छे हैं, उनमें कोई ऐब नहीं है। संभव है, एकाध मौकों पर कुछ गलत व्यवहार हो गया हो, तो उन्हें तूल देना उचित नहीं है। चाहे रिश्तेदार हों, सहकर्मी हों, मित्र हों या पड़ोसी देश के हों... दुनिया में पैदा हुआ कोई भी व्यक्ति हो, उनके पास ऐसे गुण होंगे, जो आपको पसंद हों और ऐसे गुण भी होंगे, जो आपको पसंद न हों। दोनों तरह के गुणों को समान रूप से स्वीकार करने की कला आ जाए तो सारी समस्याएं खत्म हो जाएं। इसके विपरीत जरूरत पड़ने पर दूसरों पर लाड़-प्यार बरसाने और जरूरत खत्म होने पर उन्हें दुत्कारने का रवैया जब तक रहेगा, अनबन और मन-मुटाव बना ही रहेगा।

आप क्यों यह अपेक्षा करते हैं कि दूसरे बदल जाएं? आप बदलिए न। जहां जिन-जिन से जैसा व्यवहार करना चाहिए, वैसा बरतने के लिए तैयार रहिए। अगले व्यक्ति से निपटने के लिए जो युक्ति कारगर रहेगी, उसका प्रयोग कीजिए। एक बार शंकरन पिल्लै एक खुली

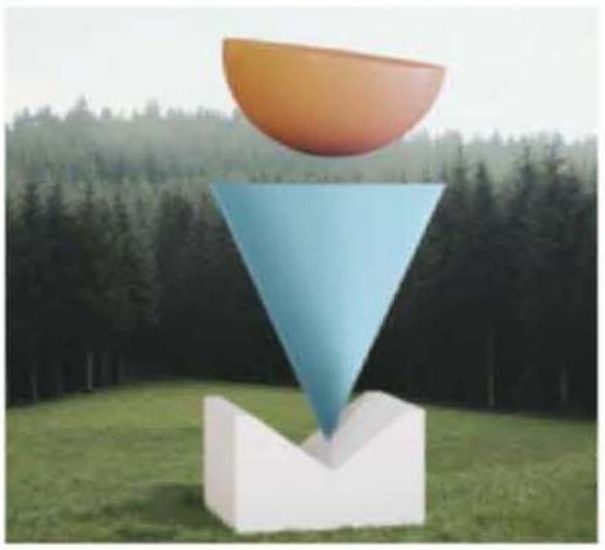

नाली में गिर पड़े। कोशिशों के बावजूद बाहर नहीं निकल पाए। ऊंची आवाज में चिल्लाने लगे, 'बचाओ, आग...आग!' लोग घबरा गए। दमकल वालों को बुलवा लिया। उन्हें बाहर निकाला। पूछने लगे, 'कहां है आग?' पिल्लै ने कहा, 'अगर मैं नाली-नाली चिल्लाता तो आप थोड़े ही आते!' अत: आवश्यकता के अनुसार युक्ति से स्वयं को बदलिए। यदि घर के सभी लोग बदलकर आप जैसे हो जाएं, तो सोचिए आप किसे डांटेंगे, किसको समझाएंगे। जरा देर निभा नहीं सकते। यदि घर में ही यह हाल है तो पूरी दुनिया को अपने समान बदलने की कोशिश करना कितनी बड़ी मूर्खता है? जिंदगी अपनी विभिन्नताओं के कारण ही दिलचस्प लगती है। अत: प्रत्येक व्यक्ति को उसी रूप में अपनाइए, जैसा वह है। ऐसा करने पर चाहे दूसरे लोग आपके अनुरूप न बदलें, जिंदगी आपके अनुरूप बन जाएगी।

कहां घूमें

गांगुलपारा झरना : वनस्पतियों और लुढ़कती पहाड़ियों से घिरे हरे-भरे जंगलों से घिरा यह सुंदर झरना, काफी ऊंचाई से गिरता है और यहां आकर प्रकृति से निकटता का एहसास होता है। प्राकृतिक वातावरण और चट्टानों से गिरते पानी की मधुर ध्वनि, गंगुलपारा को प्रकृति प्रेमियों और साहसी लोगों के लिए स्वर्ग बनाती है। गांगुलपारा झरने के पास ही गांगुलपारा डैम है।

लांजी का किला : कहा जाता है कल्चुरीवंश के गोंड राजाओं के जमाने में इस किले का निर्माण हुआ था। किले में कभी चार बुर्ज हुआ करते थे, पर इस समय एक ही शेष है। यह किला चारों तरफ से ऊंची-ऊंची दीवारों से घिरा हुआ है। किले में पुरातन काल के अवशेष और महामाया का मंदिर पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। यह मंदिर पूरी तरह पत्थरों से बना हुआ है। इस मंदिर में बहुत ही खूबसूरत नक्काशी की गई है, जो हमें प्राचीन समय की याद दिलाती है। इसमें बने जलाशय के बारे में कहा जाता है कि कि राजा और रानी इसमें स्नान किया करते थे।

हट्टा की बावड़ी : 17 से 18 शताब्दी के बीच देवगढ़ के गोंड राजाओं द्वारा निर्मित चट्टानों को काटकर बनी बहुमंजिला हट्टा की बावली (बावड़ी) अपनी बेजोड़ नक्काशी, अद्भुत कारीगरी के लिए प्रसिद्ध है। करीब दस खंभों सहित बावली के प्रवेश द्वार पर शिव और अंबिका की श्रीफल पकड़े दो सुंदर मूर्तियां चित्रित हैं। बावली की दीवार पर प्राचीन मूर्तियां अंकित हैं और कहा जाता है कि बावली के अंदर कई सुरंगें भी हैं। दिलचस्प बात यह है कि आज भी बावली में हमेशा पानी भरा रहता है।

गुप्तेश्वर महादेव : सतपुड़ा की पहाडियों से घिरी वादियों में गुप्तेश्वर महादेव शिव का मंदिर एक प्राचीन धरोहर किसी रहस्य से कम नहीं है। मान्यता है कि पत्थरों की गुफा और शिव धाम की सुरंगों में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह भक्तों को दुख-तकलीफों से परे कर देता है। वहां पहाड़ों की गुफा में जमीन के सैकड़ों फीट नीचे मां दुर्गा विराजमान हैं और यहीं भगवान शिव का प्राकृतिक और अद्भुत मंदिर है। पत्थरों की कलाकृति, शेषनाग की आकृति और बहती हुई नदी इसी गुफा के अंदर देखी जा सकती है। गुफा और सुरंगों में अद्भुत कलाकृति लोगों को हैरत में डाल देती है।

मौसम

तापमान

अधिकतम	न्यूनतम
30	27
डिग्री सेल्सियस	डिग्री सेल्सियस

बजट

यहां दो लोगों को एक दिन रहने के लिए खर्च करने होंगे

5-6 हज़ार रुपये

यादगार अनुभव

बालाघाट में ज्यादातर आदिवासी रहते हैं। बैगा जनजाति अपनी पारंपरिक कला, नृत्य, संगीत और रीति-रिवाजों के लिए प्रसिद्ध है। बैगा आदिवासियों के साथ उनका त्योहार मनाना और उनकी संस्कृति का जानना एक यादगार अनुभव था। ये आदिवासी छत्तीसगढ़ में भी रहते हैं तो दोनों स्थानों की छाप देखी जा सकती है। बैगा आदिवासियों के पारंपरिक गहनों को देख मन पुलकित हो उठा। ढोल, मंजीरा एवं पांव में पैजनिया धारण कर बैगा स्त्री-पुरुष अपनी संस्कृति का संदेश देते है तथा आयोजन में पहुंचने वालों का अभिवादन करते है। एक स्त्री ने अपनी पायल मुझे पहना दी। उनके साथ मुझे भी नृत्य करने का अवसर मिला। मड़ई का शाब्दिक अर्थ सामाजिक मिलन है। यह मेला विभिन्न गांवों के लोगों को एक साथ लाता है, जहां वे अपने पूर्वजों और संरक्षक देवताओं की पूजा करते हैं। यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि विभिन्न गांवों के लोग अपने-अपने देवी-देवताओं की मूर्तियों के साथ एक स्थान पर एकत्र हुए हैं और सामूहिक तौर पर इस त्योहार को मना रहे हैं। तभी मैंने देखा कि ढालें (मोर पंख से बनी छतरीनुमा संरचना) लाई जा रहा है। पता चला इसे देवी का रूप माना जाता है।

कैसे जाएं

निकटतम हवाई अड्डे जबलपुर और नागपुर हैं। बालाघाट जंक्शन दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के अंतर्गत आता है। यह स्टेशन गोंदिया, कटंगी, वारासिवनी, और लामटा जैसे शहरों से जुड़ा हुआ है। राज्य राजमार्गों से जबलपुर, नागपुर, मंडला, गोंदिया आदि पहुंचने के बाद कैब और नियमित बस सेवाएं उपलब्ध हैं।

कब जाएं

यहां जाने का सबसे उपयुक्त समय सितंबर से मार्च है।

क्या खरीदें

हस्तशिल्प और स्थानीय लोगों द्वारा बनाई कलाकृतियां तथा चिन्नौर चावल।

क्या खाएं

पुरपुटा की सब्जी, सूरन की करी, मावा बाटी और गन्ने का रस।

जंगलों के बीच इतिहास की बस्ती

सतपुड़ा पर्वत श्रृंखलाओं के बीच, वैनगंगा नदी के प्रवाह के साथ बसा बालाघाट मध्यप्रदेश की दक्षिण-पूर्वी सीमा पर स्थित एक शांत, सुंदर जिला है। बालाघाट का अर्थ है घाटों के ऊपर बसा शहर। मनोरम वातावरण, सदियों पुराने स्मारक और आदिवासी संस्कृति इसके विशिष्ट आकर्षण में चार चांद लगा देती है। इस टूरिस्ट डेस्टीनेशन की यात्रा करा रही हैं सुमन बाजपेयी

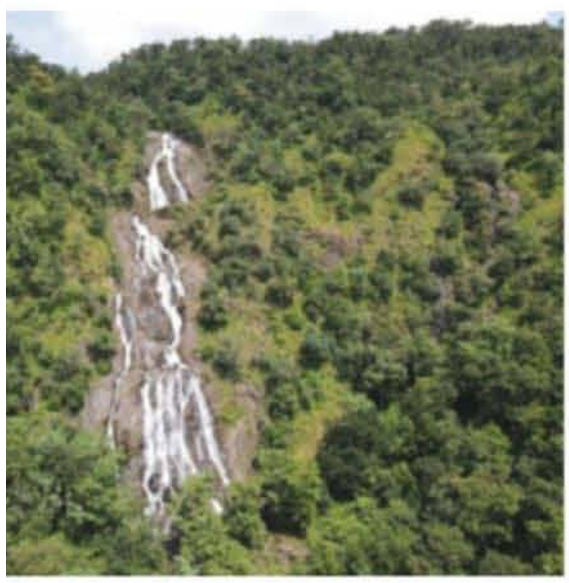

बालाघाट जिले को पहाड़, जंगल और तांबे की धरती कहा जाता है। भौगोलिक दृष्टि से पूर्वी भाग में दुर्गम वनों, मध्य भाग में दुर्गम पहाड़ियों और पश्चिम भाग में लगभग समतल धान के कृषि क्षेत्रों में विभाजित इस स्थान के पचास प्रतिशत से अधिक भाग में जंगल हैं।

शहर के पास स्थित कान्हा राष्ट्रीय उद्यान इसके प्रमुख पर्यटन स्थलों में से है। इसका इतिहास बहुत समृद्ध है, खासकर शासकों और राजवंशों का, जिन्होंने लंबे समय तक इस शहर पर शासन किया। इसे मूल रूप से बुरहा या बूरा के नाम से जाना जाता था। बारहघाट जैसा नाम इसलिए चुना गया, क्योंकि इस जगह के आसपास की सभी पहाड़ियों का नाम घाट था। यहां गढ़ा मंडला नामक एक राज्य था, जिसने इस शहर पर सफलतापूर्वक शासन किया और साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार किया। भोंसले मराठों ने भी कुछ समय तक बालाघाट पर शासन किया, फिर यह मराठा पेशवाओं के अधीन आ गया। तीसरे आंग्ल-मराठा युद्ध के बाद, बालाघाट शहर ब्रिटिश शासन के अधीन आ गया। फिर, 1956 के दौरान, बालाघाट जिला जबलपुर संभाग का हिस्सा बन गया। इसे खनिज का भंडार माना जाता है। यहां मौजूद तांबे की खान एशिया की सबसे बड़ी खानों में से एक है। इसके अलावा यहां बॉक्साइट, कानाइट और मैंगनीज भी बड़ी मात्रा में पाया जाता है। इसे जंगल की धरती कहा जाता है क्योंकि यह जिला पचास प्रतिशत तक जंगलों से घिरा हुआ है। इसके वन और खनिज संपदा ने ही अंग्रेजों को आकर्षित किया था और उन्होंने यहां कई निर्माण कार्य किए था। इनमें से एक है वैनगंगा नदी पर बना सौ साल से भी पुराना अंग्रेज कालीन पुल। यह चूना-गुड़ और बेल के जोड़ से बना है और पूरी तरह से पत्थरों से निर्मित है। इस पुल का निर्माण अंग्रेजों ने वन और खनिज संपदा को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए करवाया था। यहां जानवर भी बड़ी मात्रा में पाए जाते हैं। बारासिंगा का तो घर है ही यह, जबकि यहां भैंसा, हिरण, नीलगाय जैसे जानवर भी देखने को मिलते हैं।

इंदौर BRTS 9 महीने अटका: 100 मीटर ही हट सकी रेलिंग, चौथे प्रयास में एजेंसी तैयार, ट्रैफिक सुधार की उम्मीद

इंदौर। 2013 में ट्रैफिक सुधार के उद्देश्य से बनाये गए बीआरटीएस (बस रैपिड ट्रांजिट सिस्टम) कॉरिडोर ने अब ट्रैफिक के लिए ही समस्याएं खड़ी कर दी हैं। रोजाना जाम की स्थिति बनी रहती है और बीआरटीएस हटाने के आदेश को 9 महीने बीत जाने के बाद भी सिर्फ शुरुआती 100 मीटर रेलिंग हट सकी है। भोपाल में बने बीआरटीएस को इंदौर के बाद ही हटाया जा चुका था, लेकिन इंदौर में लगातार तीन बार टेंडर फेल होने के कारण कार्य लंबित रहा। चौथे प्रयास में राजगढ़ की एजेंसी तैयार हुई है और इसे लगभग 2.55 करोड़ रुपए में ठेका दिया गया। निगम पहले 3.68 करोड़ रुपए में काम देना चाहता था। नगर निगम का कहना है कि बीआरटीएस हटाने के साथ ही नए डिवाइडर और लाइटिंग का काम तुरंत शुरू किया जाएगा, ताकि दुर्घटना की आशंका न रहे। महापौर राजेंद्र राठौर ने बताया कि रेलिंग हटाने के बाद ट्रैफिक संभालना चुनौतीपूर्ण होगा, इसलिए बीआरटीएस हटाने और डिवाइडर बनाने का काम एक साथ किया जाएगा।

बीआरटीएस का राजीव गांधी प्रतिमा से निरंजनपुर तक 11.5 किमी लंबा कॉरिडोर है। इसे हटाने के लिए दो जनहित याचिकाएं हाईकोर्ट की इंदौर खंडपीठ में लगी थीं, जिन्हें मुख्य पीठ जबलपुर ट्रांसफर कर दी गई थी। फरवरी 2025 में हाईकोर्ट ने बीआरटीएस हटाने के आदेश दिए और मौजूदा परियोजना की व्यवहारिकता जांचने के लिए 5 सदस्यीय कमेटी बनाने के

निर्देश दिए। बीआरटीएस हटने के बाद 15 चौराहों और तिराहों पर ट्रैफिक को रफ्तार मिलेगी, जहां हर दिन 3 लाख से ज्यादा वाहन निकलते हैं। फिलहाल पीक ऑवर में इन चौराहों से वाहन तीन बार ग्रीन सिग्नल होने के बाद ही निकल पाते हैं। प्रमुख ट्रैफिक प्रभावित क्षेत्र हैं चिड़ियाघर से जीपीओ, गीता भवन, पलासिया, इंडस्ट्री हाउस, एलआईजी और रसोमा। कॉरिडोर की आरसीसी बीम की लंबाई 10,475 मीटर, चौड़ाई 0.35 मीटर और गहराई 0.30 मीटर है। इसे हटाने पर 17.29 लाख रुपए खर्च आएंगे। 18 बस शेल्टर हटाने में 8.20 लाख रुपए, छोटे आरसीसी हटाने में 3.25 लाख रुपए और स्टील रेलिंग हटाने पर कुल 34.70 लाख रुपए खर्च होंगे। कॉरिडोर से 1.53 लाख किलो स्टील निकलेगा, जिसे 30 रुपए प्रति किलो की दर से 46 लाख रुपए में बेचा जा सकेगा। कुल मिलाकर निगम की कमाई लगभग 3.37 करोड़ रुपए होगी।बीआरटीएस हटने के बाद ट्रैफिक को अतिरिक्त 24 से 30 मीटर जगह मिलेगी, जिससे जाम और बॉटलनेक की समस्या में काफी राहत मिलने की उम्मीद है।

सहायक उप निरीक्षक शैलेन्द्र सिंह चौहान ने दीपावली की रात 85 वर्षीय बुजुर्ग मां को खोजकर परिजनों से मिलवाया, परिवार में लौटी खुशियां

करैरा : करैरा थाने के सहायक उप निरीक्षक शैलेन्द्र सिंह चौहान ने मानवता की मिसाल पेश करते हुए दीपावली की रात गुम हुई 85 वर्षीय बुजुर्ग महिला को खोजकर उनके परिजनों से सकुशल मिलवाया। इस सराहनीय कार्य से न केवल परिवार में खुशियां लौट आईं, बल्कि करैरा पुलिस की संवेदनशीलता और तत्परता की पूरे क्षेत्र में प्रशंसा हो रही है जानकारी के अनुसार, करैरा थाना क्षेत्र के आईटीबीपी कैंप में रहने वाली शारदा देवी (85 वर्ष), जो कि असिस्टेंट कमांडेंट मुकेश यादव की माताजी हैं, सोमवार शाम अचानक घर से निकल गईं। उन्हें भूलने की बीमारी होने के कारण परिवारजन अत्यंत चिंतित हो उठे

सूचना मिलते ही सहायक उप निरीक्षक (ASI) शैलेन्द्र सिंह चौहान एवं चालक एनआरएस संतोष बंशकार तत्काल हरकत में आ गए। उस समय दोनों अधिकारी मोबाइल वाहन से कस्बा गश्त पर थे उन्होंने बिना किसी विलंब के कस्बे, बाजार और आसपास के क्षेत्रों में तलाश अभियान शुरू किया। लगातार खोजबीन के बाद माताजी झांसी रोड बस स्टैंड के पास मिलीं पुलिस टीम ने माताजी को सुरक्षित वाहन से घर पहुंचाया जैसे ही शारदा देवी घर लौटीं, परिवार में दीपावली की खुशियां लौट आईं परिवारजन भावविभोर होकर पुलिस टीम का आभार व्यक्त किया

असिस्टेंट कमांडेंट मुकेश यादव ने भावुक होते हुए कहा

» मेरी माताजी शाम को अचानक घर से निकल गई थीं। जब मैंने करैरा थाने के सहायक उप निरीक्षक शैलेन्द्र चौहान को सूचना दी, उन्होंने तुरंत कार्रवाई प्रारंभ की और कुछ ही मिनटों में मेरी मां को सुरक्षित खोज निकाला दीपावली की रात मेरे परिवार को अनहोनी से बचाने के लिए मैं शैलेन्द्र चौहान और उनकी टीम का हृदय से आभारी हूं मैं अपने कमांडेंट महोदय एवं एसडीओपी करैरा से अनुरोध करूंगा कि उन्हें प्रशस्ति पत्र और सम्मान प्रदान किया जाए सहायक उप निरीक्षक शैलेन्द्र सिंह चौहान अपने कर्तव्यनिष्ठ, तत्पर और मानवीय दृष्टिकोण के लिए जाने जाते हैं उन्होंने कई मौकों पर तत्काल कार्रवाई कर नागरिकों का विश्वास जीता है दीपावली की रात की उनकी यह कार्यवाही न केवल एक परिवार के लिए सुखद क्षण लेकर आई, बल्कि समाज के लिए यह प्रेरणा भी बनी कि पुलिस सिर्फ कानून की रखवाली नहीं करती, बल्कि मानवता की भी सच्ची प्रहरी है.!!

दैनिक रणजीत टाइम्स
जिला एवं तहसील स्तर पर
एजेंसी देना है
अपना बायोडाटा सम्पूर्ण विवरण के साथ हमें प्रेषित करें।
सम्पर्क करें
8224951278 :: 9827068888

जन्मदिन की अग्रिम शुभ सूचना
"रंजीत टाइम्स" में अब आप अपने या अपने प्रियजनों का जन्मदिन एक दिन पहले ही निशुल्क प्रकाशित करवा सकते हैं!
बस हमें भेजिए: 1 जन्मदिन मनाने वाले की फोटो
2 उसका पूरा नाम- 3 बधाई देने वाले का नाम जन्मदिन के एक दिन पहले ही विज्ञापन भेज दें, ताकि समय रहते प्रकाशित किया जा सके।
भेजने का नंबर (Aditya): 8224951278
रंजीत टाइम्स में आपका विज्ञापन पूरी तरह मुफ्त प्रकाशित किया जाएगा!
अपने जज़बातों को शब्द दें – सिर्फ रंजीत टाइम्स के साथ।
टीम रंजीत टाइम्स- "आपका अपना अख़बार, आपकी आवाज़"
रणजीत टाइम्स

गुलाब सलाट-मेहनत, लगन और आत्मविश्वास की जीवंत मिसाल

एक्शन एक्टर गुलाब सलाट को मिला ''राष्ट्रीय एकता सम्मान''

लोक गौरव राष्ट्रीय एकात्मता परिषद द्वारा राज्यस्तरीय लोक सेवा गौरव अवार्ड

मुंबई (रणजीत टाइम्स ब्यूरो): गुजरात के आनंद जिले के एक साधारण परिवार में जन्मे मा. गुलाब सलाट, आज भारतीय सिनेमा जगत में एक उभरते हुए एक्शन एक्टर के रूप में अपनी अलग पहचान बना चुके हैं। 12 अक्टूबर 2025 को वाशी, नवी मुंबई में आयोजित लोक गौरव राष्ट्रीय एकात्मता परिषद राष्ट्रीय एकता सम्मान महोत्सव में उन्हें "लोक सेवा गौरव अवार्ड" से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विशेष धन्यवाद नासिर खान सर एवं सलमा खान मैडम जी को दिया गया।

संघर्ष की शुरुआत-तंबू से मुंबई तक का सफर

गुलाब सलाट के पिता तम्मा भाई सलाट अत्यंत गरीब थे और उन्होंने जीवनभर एक साधारण खाट-तंबू में रहकर संघर्ष किया। किंतु उन्होंने अपने बेटे के सपनों को कभी मरने नहीं दिया। बचपन से ही गुलाब को फिल्मों की दुनिया से गहरा लगाव था। केवल 8 वर्ष की आयु में उन्होंने अपने पिता से कहा था।

"एक दिन मैं फिल्मों में काम करूंगा।"

पिता ने बेटे के सपनों को पंख दिए और उन्हें ऑल इंडिया वाडो काई कराटे दो अकादमी में दाखिला दिलाया। यहीं से गुलाब ने अपने जीवन की दिशा तय की-एक्शन और मार्शल आर्ट के माध्यम से फिल्मी जगत में पहचान बनाना।

हैदराबाद से मुंबई-मेहनत और धोखे की कहानी

डांस और जिमनास्टिक में दक्षता प्राप्त करने हेतु गुलाब हैदराबाद गए और एक वर्ष का कोर्स पूरा किया। इसके बाद पिता-पुत्र मुंबई पहुंचे ताकि फिल्मों में अवसर मिल सके। परंतु किस्मत ने फिर परीक्षा ली-एक निर्देशक ने 15,000 ठग लिए और काम देने का वादा पूरा नहीं किया। निराश होकर वे आनंद लौट आए, और शीघ्र ही पिता का निधन हो गया। यह उनके जीवन का सबसे कठिन दौर था।

संघर्ष से सफलता तक

पिता के निधन के बाद भी गुलाब ने हार नहीं मानी। उन्होंने कराटे सिखाना शुरू किया, छोटे-छोटे स्टेज शो किए और अपनी मेहनत से परिवार का गुज़ारा किया। इन संघर्षों के बीच उन्होंने ठान लिया कि अपने पिता का नाम रोशन करना ही उनका जीवन उद्देश्य रहेगा। लगातार प्रयासों के बाद उन्हें टीवी सीरियल 'जय जय जग जननी दुर्गा मां जय बजरंगबली' में अवसर मिला- यहीं से फिल्मों में उनका सफर प्रारंभ हुआ।

अब "एक्शन" ही पहचान

आज गुलाब सलाट एक प्रशिक्षित एक्शन एक्टर हैं, जिन्होंने मार्शल आर्ट, कराटे, जिमनास्टिक, योगा, बॉडी स्टंट, ब्रेक डांस, लाठी, ननचाकू, तलवार, राइफल शूटिंग और फिल्मी अभिनय में विशेष दक्षता हासिल की है।

»» उन्होंने कहा -» "मैं अपने पिता का नाम रोशन करने का सपना जल्द ही पूरा करूंगा।"

गुलाब को अब तक कई प्रतिष्ठित पुरस्कार मिल चुके हैं-

»» दिल्ली बॉलीवुड सिने रिपोर्टर अवार्ड
»» नागपुर गौरव महाराष्ट्र अवार्
»» मुंबई जन गौरव कार्य दर्पण अवार्ड
»» वडोदरा सिने मीडिया अवार्ड वाइब्रेंट गुजराती फिल्म
»» अवार्ड सम्मान और प्रेरणा
»» गुलाब सलाट की कहानी उन सभी युवाओं के लिए प्रेरणादायक है जो परिस्थितियों से हार मान लेते हैं। उनका जीवन संदेश देता है कि "संघर्ष चाहे कितना भी बड़ा हो, अगर इरादा मजबूत है तो सफलता निश्चित है।"

महू की ऐतिहासिक पारंपरिक ढोक पड़वा धूमधाम से मनाई

महू-इंदौर- जुगनू जादवसिंह धनावत ने बताया महू की ऐतिहासिक पारंपरिक ढोक पड़वा पर रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और स्थानीय लोगों ने जगह-जगह ढोल धमाको के साथ आत्मीय स्वागत किया नगर भ्रमण में मुख्य रूप से प्रदेश कांग्रेस सेवादल अध्यक्ष योगेश यादव, जिला कांग्रेस अध्यक्ष विपिन वानखेडे, वरिष्ठ कांग्रेस नेता कैलाशदत्त पांडे, जिला पंचायत सदस्य कन्हैयालाल ठाकुर, मुजीब कुरैशी, रामेश्वर पटेल, शक्तिसिंह गोयल, जुगनू जादवसिंह धनावत, जीतू ठाकुर, विजय नौलखा, पुनीत शर्मा, एडवोकेट दिनेश पंचोली, जनपद प्रतिनिधि चंदरसिंह ठाकुर, अमित अग्रवाल, देवेंद्र अग्रवाल, विष्णु हारोड़, कैलाश गोयल,मनीष वर्मा, पुनीत शर्मा,बैकुंठ पटेल, दिलीपसिंह गोयल, राजकुमार बागड़ी, गजेंद्रसिंह राठौर, हुक्कम आंजना,महेंद्र यादव, नरेश जोशी, मुन्नालाल वर्मा, हरिराम चौहान, बाबूलाल भूत, राहुल शर्मा, बाबूलाल अमेरिया,मंसूर पटेल, रशीद पटेल, एहसान पटेल, विष्णु मालवीय, जगमोहन सोन,रवि मिश्रा,ओम पटेल, विवेक सकोरिया, मनमोहन गुनावत, राम पटेल, वीरेंद्र झंझोट, शुभम जैन, दीपक सेठ, भगत भाट,गोपाल नेगी,भगवान चौधरी,प्रकाश चौधरी, रवि पटेल, पूनमचंद, घनश्याम यादव, उमरावसिंह, रामचंद्र नेताजी,गणेश यादव, नरेंद्र मीणा, विवेक मीणा, शैलेश जाट, रोहित कागट, अरविंद गुनावत, शिबू भाई,साकिर खान, मुस्तकीम कुरैशी, सद्दाम पटेल, विष्णु दाहिया, अरुण गुर्जर, मनमोहन कौशल, रोहित ठाकुर, विकास ठाकुर, योगेश बीना, लोकेश जाट, राकेश पाटीदार,राजू, अंशुल राठौर, इत्यादि सैकड़ो जन उपस्थित होकर पांच दिवसीय दीप उत्सव की शुभकामनाएं दी।